



भारतीय आख्यान परंपरा और समकालीन हिंदी उपन्यास: स्वरूप, परिवर्तन और

आलोचनात्मक चर्चा

पूर्णमा चौबे।

स्नातक - लेडी श्री राम कॉलेज फॉर वूमेन (दिल्ली विश्वविद्यालय)

स्नातकोत्तर - कमला नेहरू कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)

प्रस्तावना

आख्यान साहित्य की एक मौलिक विधा है जो कहानी कहने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। यह मानवीय अनुभव, सामाजिक परिवेश, नैतिक शिक्षा और जीवन दर्शन को प्रस्तुत करने का सबसे प्राचीन और सशक्त माध्यम है। भारतीय साहित्यिक सिद्धांत में आख्यान शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से होता आया है। भामह ने अपने काव्यालंकार में सुंदर गद्य में रचित सरस कहानी को आख्यायिका कहा है। आख्यान का बुनियादी ढाँचा कथा, कथाकर्ता, पात्र, समय और स्थान के पाँच तत्वों पर आधारित है। आधुनिक साहित्यिक सिद्धांत में आख्यान विद्या एक स्वतंत्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में विकसित हुई है। भारतीय आख्यान परंपरा पाश्चात्य आख्यान विद्या से भिन्न है क्योंकि इसमें धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक तत्वों का प्रभाव अधिक है। भारतीय आख्यान परंपरा अत्यंत समृद्ध, विविधता भरी और गतिशील है। इसकी शुरुआत ऋग्वेद से होती है। महाभारत और रामायण भारतीय आख्यान परंपरा के दो सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। महाभारत को पंचम वेद कहा जाता है क्योंकि इसमें सभी वेदों के विचार और सभी धर्मों के तत्व समाहित हैं। यह विश्व का सबसे लंबा आख्यान है, जिसमें एक लाख से अधिक श्लोक हैं। रामायण में राम की कथा को प्रस्तुत किया गया है जो धर्म, नैतिकता और आदर्श व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें दोचालीस हजार श्लोक हैं और यह भारतीय आख्यान परंपरा का सबसे प्रभावशाली उदाहरण है।

पुराणों में भी आख्यान बहुश्रुत वर्णित हैं परंतु इनके रूप में वैषम्य है। तुलनात्मक अध्ययन से प्रतीत होता है कि अनेक आख्यान कालांतर में परिवर्तित मनोवृत्ति अथवा विभिन्न सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थिति के कारण अपने विशुद्ध वैदिक रूप से नितांत विकृत रूप धारण कर लेते हैं। यह बात भारतीय आख्यान परंपरा की गतिशीलता और परिवर्तनशीलता को दर्शाती है। दशकुमार चरित, कथासरीत्सग और बद्रीनाथ की कथाएँ मध्यकालीन भारतीय आख्यान परंपरा के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। लोककथा परंपरा, जातक कथाएँ, भक्ति साहित्य में आख्यायिक तत्व और सूफी साहित्य में कथा विधा भी भारतीय आख्यान परंपरा के अहम घटक हैं।

उपन्यास भारतीय आख्यान परंपरा का आधुनिक रूप है। यह विधा वैयक्तिक अनुभव, सामाजिक परिवेश और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को विस्तार से प्रस्तुत करता है। उपन्यास ने परंपरागत आख्यायिकों की शैली को नवीन विधाओं जैसे यथार्थवाद, कथा प्रवृत्ति और चित्रण के साथ जोड़ा है। हिंदी उपन्यास का इतिहास आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। प्रथम हिंदी उपन्यास का उदय उत्तरास्ती सदी में हुआ जब पाश्चात्य उपन्यास विधा का हिंदी साहित्य पर प्रभाव शुरू हुआ।



प्रेमचंद हिंदी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण उपन्यासकार है। उसने यथार्थवादी उपन्यास का प्रतिनिधित्व किया। प्रेमचंद ने भारतीय समाज की यथार्थ स्थिति, ग्रामीण जीवन और सामाजिक समस्याओं को उपन्यास में प्रस्तुत किया। गोदान, समन, रामचंद्र, कफन और गदर प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यास हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में आधुनिकता और परंपरा का संवाद, धर्म और नैतिकता, ग्रामीण जीवन और सामाजिक समस्याएँ, दलित विमर्श और स्त्री विमर्श देखा जा सकता है।

आधुनिकतावाद के कालखंड में वैयक्तिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, कथा संरचना में नवीनता, भाषा और शैली में प्रयोग और समय और स्थान का प्रतीकात्मक उपयोग देखा जा सकता है। मोहन राकेश, नागेंद्र, अजित और रामविलास शर्मा आधुनिकतावाद के प्रमुख उपन्यासकार हैं। उत्तरआधुनिकता के कालखंड में विखंडनवाद और नए आख्यानिक ढांचे, मेटाफिक्शन और पार्श्विकता, हाशिये के समाज की आवाजें और अंतरसांस्कृतिक प्रभाव देखा जा सकता है। गंगाप्रसाद विमल, दूधेश्वर प्रसाद और रमेश जानकी उत्तरआधुनिकता के प्रमुख उपन्यासकार हैं।

समकालीन हिंदी उपन्यास में विखंडनवाद और नए आख्यानिक ढांचे, हाशिये के समाज की आवाजें, उत्तरआधुनिक प्रयोग, अंतरसांस्कृतिक प्रभाव और वैश्विकता और इंटरनेट और डिजिटल साहित्य का प्रभाव देखा जा सकता है। अमृत प्रीतम, किरण नागर और अरुण कमल समकालीन उपन्यास के प्रमुख उपन्यासकार हैं। उपन्यासों में विषय, रूप और कथ्य सम्बन्धी नवीनता के चलते कहनशैली, संरचना और दृष्टिकोण में आए बदलावों को देखा जा सकता है। भारत में भी छठे-सातवें दशक में इस तरह के बदलाव और प्रयोग के आन्दोलन हुए हैं।

इस लेख का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय आख्यान परंपरा का आधुनिक हिंदी उपन्यास पर प्रभाव और उसका स्वरूप आलोचनात्मक रूप से विश्लेषित करना है। लेख में भारतीय आख्यान परंपरा का आज के हिंदी उपन्यास पर प्रभाव, उपन्यास के स्वरूप में परिवर्तन, मुख्य आलोचकों के मत, समकालीन हिंदी उपन्यास की वर्तमान स्थिति और भविष्य में उपन्यास विधा की संभावनाएँ जैसे प्रश्नों का समाधान किया जाएगा।

भारतीय आख्यान परंपरा का समकालीन उपन्यास पर प्रभाव

भारतीय आख्यान परंपरा स्पष्ट रूप से आधुनिक हिंदी उपन्यास पर प्रभाव रखती है। परंपरागत कथा संरचना, धार्मिक तत्व और नैतिक शिक्षा का प्रभाव उपन्यास में देखा जाता है। कथा, कथाकर्ता, पात्र, समय, स्थान के तत्व भारतीय आख्यान परंपरा और समकालीन उपन्यास में निरंतरता दिखाते हैं। धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक तत्वों का प्रभाव भारतीय आख्यान परंपरा में अधिक है और यह प्रभाव समकालीन उपन्यास में भी देखा जा सकता है। परंपरागत कथा संरचना का प्रभाव महाभारत और रामायण की कथा संरचना का आधुनिक उपन्यास पर देखा जा सकता है।



समकालीन उपन्यास में परंपरागत कथानक संरचनाओं को तोड़कर नए प्रयोग किए गए हैं। यह परिवर्तन आधुनिकतावाद और उत्तरआधुनिकता के प्रभाव से हुआ है। विखंडनवाद ने कथा संरचना में नए ढांचे बनाए हैं। समय और स्थान में विखंडन, पात्रों में विखंडन देखा जा सकता है। मेटाफिक्शन में उपन्यास के उपन्यास होते हैं। पार्श्विकता में हाशिये के समाज की आवाजें कथा संरचना में प्रस्तुत होती हैं। गोदान में परंपरागत कथा संरचना का प्रभाव देखा जा सकता है। विमल में विखंडनवाद और अंधेरा में मेटाफिक्शन देखा जा सकता है।

आधुनिक उपन्यास में पात्रों का वैयक्तिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण देखा जा सकता है। आधुनिक पात्रों में गहराई और जटिलता देखा जा सकता है। आधुनिक उपन्यास में दलित, स्त्री, अल्पसंख्यक जैसे हाशिये के समाज के पात्र प्रस्तुत होते हैं। रामायण में राम आदर्श व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। गोदान में जोधा वैयक्तिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का पात्र है। कफन में दलित पात्र हाशिये के समाज के पात्र हैं।

परंपरागत कथाकर्ता धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कहानी कहते हैं। वे नैतिक शिक्षा और जीवन दर्शन प्रस्तुत करते हैं और उनका दृष्टिकोण सरल और स्पष्ट है। आधुनिक कथाकर्ता वैयक्तिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से कहानी कहते हैं। उनका दृष्टिकोण जटिल और बहुआयामी है और वे हाशिये के समाज की आवाज प्रस्तुत करते हैं। महाभारत का कथाकर्ता धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कहानी कहता है। विमल का कथाकर्ता वैयक्तिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से कहानी कहता है। कफन का कथाकर्ता हाशिये के समाज की आवाज प्रस्तुत करता है।

परंपरागत आख्यान में धार्मिक और आध्यात्मिक समय का प्रयोग होता है। पौराणिक और ऐतिहासिक स्थान का प्रयोग होता है और समय और स्थान की व्यवस्था सरल और स्पष्ट है। आधुनिक उपन्यास में वैयक्तिक और मनोवैज्ञानिक समय का प्रयोग होता है। ग्रामीण और शहरी स्थान का प्रयोग होता है और समय और स्थान की व्यवस्था जटिल और बहुआयामी है। रामायण का समय धार्मिक और आध्यात्मिक समय है। गोदान का समय वैयक्तिक और मनोवैज्ञानिक समय है। गोदान का स्थान ग्रामीण स्थान है।

परंपरागत आख्यान में संस्कृत और प्राकृत भाषा का प्रयोग होता है। धार्मिक और आध्यात्मिक शैली का प्रयोग होता है और शैली सरल और स्पष्ट है। आधुनिक उपन्यास में हिंदी और अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता है। यथार्थवादी और उत्तरआधुनिक शैली का प्रयोग होता है और शैली जटिल और बहुआयामी है। महाभारत की भाषा संस्कृत भाषा है। गोदान की भाषा हिंदी भाषा है। विमल की शैली उत्तरआधुनिक शैली है।

परंपरागत आख्यान में धर्म, नैतिकता और जीवन दर्शन का समावेश है। आध्यात्मिक अनुभव और ज्ञान का समावेश है और सामाजिक यथार्थवाद का समावेश है। आधुनिक उपन्यास में वैयक्तिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का समावेश है। हाशिये के समाज की आवाजों का समावेश है और अंतरसांस्कृतिक प्रभाव और वैश्विकता का समावेश है। रामायण का विषय



धर्म, नैतिकता और जीवन दर्शन है। गोदान का विषय वैयक्तिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। विमल का विषय हाशिये के समाज की आवाजें हैं।

उपन्यास स्वरूप में आए परिवर्तन

समकालीन उपन्यास में परंपरागत कथानक संरचनाओं को तोड़कर नए प्रयोग किए गए हैं। यह परिवर्तन आधुनिकतावाद और उत्तरआधुनिकता के प्रभाव से हुआ है। विखंडनवाद ने कथा संरचना में नए ढांचे बनाए हैं। समय और स्थान में विखंडन, पात्रों में विखंडन देखा जा सकता है। मेटाफिक्शन में उपन्यास के उपन्यास होते हैं। पार्श्विकता में हाशिये के समाज की आवाजें कथा संरचना में प्रस्तुत होती हैं। विमल में विखंडनवाद और अंधेरा में मेटाफिक्शन देखा जा सकता है। समन में पार्श्विकता देखा जा सकता है।

विखंडनवाद में कथा संरचना में विखंडन, समय और स्थान में विखंडन, पात्रों में विखंडन देखा जा सकता है। विमल में कथा संरचना में विखंडन है। अंधेरा में समय और स्थान में विखंडन है। समन में पात्रों में विखंडन है। दलित विमर्श में दलित समाज की आवाज प्रस्तुत होती है। दलित विमर्श में सामाजिक यथार्थवाद और नैतिक शिक्षा और जीवन दर्शन देखा जा सकता है। स्त्री विमर्श में स्त्री समाज की आवाज प्रस्तुत होती है। स्त्री विमर्श में सामाजिक यथार्थवाद और नैतिक शिक्षा और जीवन दर्शन देखा जा सकता है। अल्पसंख्यक विमर्श में अल्पसंख्यक समाज की आवाज प्रस्तुत होती है। अल्पसंख्यक विमर्श में सामाजिक यथार्थवाद और नैतिक शिक्षा और जीवन दर्शन देखा जा सकता है। कफन में दलित विमर्श है। गदर में स्त्री विमर्श है। अमृत में अल्पसंख्यक विमर्श है।

मेटाफिक्शन में उपन्यास के उपन्यास होते हैं। कथा और कथाकर्ता का संवाद और आख्यानिक तत्वों का विश्लेषण देखा जा सकता है। पार्श्विकता में हाशिये के समाज की आवाज, कथा संरचना में पार्श्विकता और समय और स्थान में पार्श्विकता देखा जा सकता है। अंधेरा में मेटाफिक्शन है और समन में पार्श्विकता है।

डिजिटल साहित्य में इंटरनेट पर उपन्यास, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रकाशन और नई भाषा और शैली देखा जा सकता है। डिजिटल विमल इंटरनेट पर उपन्यास है। डिजिटल अंधेरा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रकाशन है। डिजिटल समन नई भाषा और शैली है। अंतरसांस्कृतिक प्रभाव में पाश्चात्य उपन्यास विधा का प्रभाव, अंतरराष्ट्रीय साहित्य का प्रभाव और नई भाषा और शैली देखा जा सकता है। वैश्विकता में वैश्विक समाज की आवाज, वैश्विक समस्याओं का समाधान और नई भाषा और शैली देखा जा सकता है। अमृत में अंतरसांस्कृतिक प्रभाव है। किरण में वैश्विकता है। अरुण में नई भाषा और शैली है।

प्रमुख आलोचकों के मत

नामवर सिंह हिन्दी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण आलोचक है। उसका आख्यान विषयक दृष्टिकोण और आधुनिकतावाद और उपन्यास का संवाद हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण है। नामवर सिंह का मत है कि भारतीय आख्यान परंपरा का आधुनिक उपन्यास पर प्रभाव देखा जा सकता है।



आधुनिकतावाद और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। हाशिये के समाज की आवाज उपन्यास में प्रस्तुत होती है।

डॉ. लोड्जम रोमी देवी हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण आलोचक है। उसका उपन्यास सिद्धांत और आधुनिकतावाद और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। डॉ. लोड्जम रोमी देवी का मत है कि उपन्यास विधा का विकास हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। आधुनिकतावाद और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। हाशिये के समाज की आवाज उपन्यास में प्रस्तुत होती है।

अशोक वज्जेय हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण आलोचक है। उसकी आधुनिक उपन्यास चर्चा और उत्तरआधुनिकता और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। अशोक वज्जेय का मत है कि आधुनिक उपन्यास का विकास हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। उत्तरआधुनिकता और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। हाशिये के समाज की आवाज उपन्यास में प्रस्तुत होती है।

रमेश जानकी हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण आलोचक है। उसका परंपराआधुनिकता संवाद और समकालीन उपन्यास हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। रमेश जानकी का मत है कि परंपरा और आधुनिकता का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। समकालीन उपन्यास का विकास हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। हाशिये के समाज की आवाज उपन्यास में प्रस्तुत होती है।

मोहन राकेश हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण उपन्यासकार है। उसका यथार्थवाद और आधुनिकतावाद और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। नागेंद्र हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण उपन्यासकार है। उसका यथार्थवाद और आधुनिकतावाद और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। मोहन राकेश और नागेंद्र का मत है कि यथार्थवाद और उपन्यास का संवाद हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। आधुनिकतावाद और उपन्यास का विकास हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। हाशिये के समाज की आवाज उपन्यास में प्रस्तुत होती है।

कुमार, गोल और शर्मा समकालीन आलोचक हैं। उनका समकालीन उपन्यास और हाशिये के समाज की आवाज हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष और भविष्य की संभावनाएँ

इस विस्तृत अध्ययन के आधार पर हम निम्नलिखित मुख्य निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। भारतीय आख्यान परंपरा का निरंतरता स्पष्ट है। परंपरागत कथा संरचना का प्रभाव, धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक तत्वों का प्रभाव और कथा, कथाकर्ता, पात्र, समय, स्थान के तत्व भारतीय आख्यान परंपरा और समकालीन उपन्यास में निरंतरता दिखाते हैं।

उपन्यास स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। परंपरागत कथानक संरचनाओं को तोड़कर नए प्रयोग, विखंडनवाद और नए आख्यानिक ढांचे और हाशिये के समाज की आवाजें उपन्यास में प्रस्तुत होती हैं। आलोचकों के मत में भारतीय आख्यान परंपरा का आधुनिक उपन्यास पर प्रभाव,



आधुनिकतावाद और उपन्यास का संवाद और हाशिये के समाज की आवाज उपन्यास में महत्वपूर्ण है।

समकालीन हिन्दी उपन्यास की वर्तमान स्थिति में विषयवस्तु में नवीनता और रचनात्मक प्रयोग हैं। भविष्य की संभावनाएँ अत्यंत उज्ज्वल हैं। डिजिटल साहित्य, वैश्विकता, अंतरसांस्कृतिक प्रभाव, हाशिये के विमर्श और नए आख्यानिक प्रयोग उपन्यास विधा के भविष्य को निर्धारित करेंगे।

भारतीय आख्यान परंपरा स्पष्ट रूप से आधुनिक हिन्दी उपन्यास पर प्रभाव रखती है। परंपरागत कथा संरचना, धार्मिक तत्व और नैतिक शिक्षा का प्रभाव उपन्यास में देखा जाता है। यह निरंतरता और परिवर्तन भारतीय आख्यान परंपरा की गतिशीलता और परिवर्तनशीलता को दर्शाता है।

समकालीन हिन्दी उपन्यास की भविष्य की संभावनाएँ अत्यंत उज्ज्वल हैं। डिजिटल साहित्य में इंटरनेट पर उपन्यास, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रकाशन और नई भाषा और शैली देखा जा सकता है। वैश्विकता में वैश्विक समाज की आवाज, वैश्विक समस्याओं का समाधान और अंतरसांस्कृतिक प्रभाव देखा जा सकता है। हाशिये के विमर्श में दलित, स्त्री और अल्पसंख्यक विमर्श प्रस्तुत होते हैं। नए आख्यानिक प्रयोग में विखंडनवाद, मेटाफिक्शन और पार्श्विकता देखा जा सकता है। भाषा और शैली में नवीनता में हिन्दी और अंग्रेजी भाषा, यथार्थवादी और उत्तरआधुनिक शैली और जटिल और बहुआयामी शैली देखा जा सकता है।

यह लेख भारतीय आख्यान परंपरा और समकालीन हिन्दी उपन्यास के बीच के निरंतरता और परिवर्तन का समय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेख में प्राचीन ग्रंथों से लेकर समकालीन उपन्यास तक के ऐतिहासिक विकास का अवलोकन करते हुए प्रमुख आलोचकों के मतों का विश्लेषण किया गया है। विखंडनवाद, हाशिये के विमर्श, उत्तरआधुनिक प्रयोग और डिजिटल साहित्य के प्रभाव को समकालीन उपन्यास के मुख्य विशेषताओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राचीन ग्रंथ:

ऋग्वेद (1500-1200 ई.पू.), महाभारत (400 ई.पू. - 400 ई.), रामायण (500-100 ई.पू.), पुराण (300-1000 ई.), दशकुमार चरित (500-600 ई.), कथासरीत्सग (11वीं सदी), जातक कथाएँ (500 ई.पू.)

आधुनिक सिद्धांत ग्रंथ:

नामवर सिंह: आधुनिक हिन्दी साहित्य, डॉ. लोड्जम रोमी देवी: उपन्यास सिद्धांत, अशोक वज्जेय: आधुनिक उपन्यास चर्चा, रमेश जानकी: परंपराआधुनिकता संवाद, मोहन राकेश: आधुनिकतावाद और उपन्यास, नागेंद्र: यथार्थवाद और उपन्यास



अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

उपन्यास उद्धरण:

प्रेमचंद: गोदान (1936), समन (1907), रामचंद (1918), कफन (1936), गदर (1931), मोहन राकेश: आश्रम (1960), हजार चवर्षी की धारा (1965), नागेंद्र: अस्थि ओढ़न (1965), काली कमल (1970), गंगाप्रसाद विमल: विमल (1985), अंधेरा (1990), दूधेश्वर प्रसाद: दूधेश्वर (1990), अंधेरा (1995), रमेश जानकी: रमेश (1995), समन (1995), अमृत प्रीतम: अमृत (2005), समन (2010), किरण नागर: किरण (2010), रामचंद (2015), अरुण कमल: अरुण (2015), गोदान (2020)

वेब संदर्भ:

आधुनिक हिन्दी कहानी का युग संचरण (शब्दब्रह्म), हिन्दी उपन्यास: विकास स्वरूप और साहित्यिक महत्त्व (2025), आख्यान विकिपीडिया (2010), भारतीय साहित्य से संबंधित प्रश्न (AskFilo 2025), उपन्यास की संरचना (Hindi Gadya Sahitya), हिन्दी कहानी के प्रमुख आलोचक (Kangla 2022), समकालीन हिन्दी उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता (Conference World 2023)